गलातियों

1 जिस यीशु को परमेश्वर पिता ने मरे हुओं
में से जिलाया था, उन्हीं के द्वारा मुझ
पौलुस को भेजा गया है, मुझे किसी इन्सान
ने नहीं भेजा है। 2 यह पत्र गलातिया की उन
सभी मण्डलियों के लिए उन भाईयों की ओर
से भी है जो मेरे साथ हैं।
3 हम सभी की ओर से तुम्हें स्वर्गिक पिता
और प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह और शान्ति
मिले। 4 यीशु, जिन्होंने हमारे पिता की इच्छा
के आधार पर हमारे अपराधों के लिए अपने
आप को दिया ताकि हमें इस बुरे संसार से
छुड़ा लें, 5 उन्हीं को प्रशंसा, सम्मान और
स्तुति सदा मिलती रहे। ऐसा ही हो।
6 मुझे आश्चर्य यह है कि इतनी जल्दी तुम
यीशु मसीह से, जिन्होंने अपनी बड़ी कृपा से
तुम्हें मुक्ति दी थी, मुड़ कर एक अलग तरह
की विचारधारा से प्रभावित हो रहे हो। 7 वह
सही सोच[a] नहीं है। लेकिन कुछ लोग तुम्हें
तकलीफ़ दे रहे हैं, और मसीह के आनन्द
के समाचार को भ्रष्ट कर रहे हैं। 8 यदि हम
या स्वर्ग से कोई दूत उस अच्छे समाचार
के अलावा कोई और संदेश सुनाए, तो उसे
सज़ा मिले। 9 जैसा मैं पहले कह चुका हूँ,
अब एक बार फिर कहता हूँ, यदि मेरे सुनाए
हुए सुसमाचार से हट कर कोई सुसमाचार
सुनाता है, तो वह सज़ा पाए।
10 क्या मैं मनुष्य से प्रशंसा चाहता हूँ या
जगत के स्वामी से? क्या मैं मनुष्यों को खुश
करने की कोशिश कर रहा हूँ? क्योंकि यदि मैं
अभी तक मनुष्यों को खुश करने की कोशिश
कर रहा हूँ, तो मैं मसीह का सेवक हो ही नहीं
सकता।
11 लेकिन भाईयो-बहनो, मैं तुम्हें बताता हूँ
कि जिस सु-समाचार को मैंने सुनाया था वह
मनुष्य का नहीं है। 12 इसलिए कि मैंने उसे
मनुष्य से हासिल नहीं किया, न ही मुझे किसी
ने सिखाया था, किन्तु मैंने इसे यीशु मसीह से
सीखा था।
13 इसलिए कि यहूदी मत में मेरे
आचार-व्यवहार के विषय तुमने सुना है, कि
मैंने असीमित रूप में, परमेश्वर के चर्च[b]
को सताया और नष्ट करने का प्रयत्न किया।
14 मेरे अपने देश में और बहुत से लोगों की
तुलना में जो यहूदी मत के थे, मैं आगे बढ़
चुका था। अपने पूर्वजों की परम्पराओं से
अधिक जोश उनकी तुलना में मुझ में था।
15 किन्तु जब परमेश्वर, जिन्होंने मुझे अपनी
बड़ी दया से माता के गर्भ से बुलाया था,
16 जिस से अपने बेटे को मुझ में दिखा सके
ताकि मैं गैर यहूदियों में यह संदेश दूँ, तब न
तो मैंने अपनी इच्छा की परवाह की, 17 न
ही मेरे से पहले ठहराए गए प्रेरितों से सलाह
ली, किन्तु सीधे अरब चला गया और फिर
से वापस दमिश्क आ गया।
18 तीन साल बाद, मैं पतरस से मिलने
यरूशलेम गया और पन्द्रह दिन उसके साथ
रहा। 19 वहाँ यीशु के भाई याकूब को
छोड़कर मेरी मुलाकात यीशु के किसी और
प्रेरित से नहीं हुयी। 20 यह सब झूठ नहीं,
मैं परमेश्वर को उपस्थित जान कर लिख
रहा हूँ। 21 इसके पश्चात् मैं सीरिया और
किलकिया इलाके में आया। 22 किन्तु मसीह
में यहूदिया के चर्चों ने मेरा चेहरा अब तक
कभी नहीं देखा था। 23 उन्होंने यह केवल

[a] **1.7** शिक्षा [b] **1.13** मण्डली, कलीसिया

सुना ही था कि जो हमें पहले सताया करता
था, अब वह खुद उस संदेश को सुना रहा है,
जिसे नाश करने की कोशिश किया करता
था। 24 वे मुझ में आए बदलाव के लिए
परमेश्वर की बड़ाई किया करते थे।

2 चौदह वर्ष के बाद मैं तीतुस और
बरनबास के साथ फिर से यरूशलेम
गया। 2 स्वर्गिक मार्गदर्शन पाने के बाद मैंने
ऐसा किया था, ताकि मैं उनके सामने उस
सुसमाचार को रख सकूँ, जिसे मैंने गैर
यहूदियों को सुनाया था। ऐसा मैंने आदरणीय
लोगों के साथ अकेले में किया, ताकि मेरी
दौड़[a] बेकार न ठहरे। 3 यहाँ तक कि तीतुस
जो यूनानी था और मेरे साथ था, खतना
कराने के लिए मजबूर नहीं किया गया। 4 यह
उन झूठे भाईयों के कारण हुआ जिन्हें गुप्त
तरीके से लाया गया था। वे मसीह यीशु में
जो हमारी आज़ादी थी, उस से हमें हटाने के
लिए, लुके-छुपे जासूसी कर रहे थे। 5 हम ने
उनके हाथों में एक क्षण के लिए भी अपने
आप को सुपुर्द नहीं किया, ताकि खुशी के
संदेश की सच्चाई तुम्हारे साथ बनी रहे।

6 जो लोग कुछ समझे जाते थे उन से मुझे
कुछ भी हासिल न हुआ-वे कैसे थे इस का
भी मुझ पर कोई असर नहीं हुआ, क्योंकि
परमेश्वर किसी की भी तरफ़दारी नहीं करते
हैं। 7 इसके विपरीत उन्होंने देखा, कि खतना
रहित लोगों को खुशी का संदेश देने की
ज़िम्मेदारी मुझे सौंपी गयी है जिस तरह से
खतना वालों की ज़िम्मेदारी पतरस को दी
गयी थी। 8 जो पवित्र आत्मा पतरस की
प्रेरिताई सेवा में कार्य कर रहा था, वही
प्रभावशाली तरीके से गैरयहूदियों में मेरे द्वारा
काम कर रहा था। 9 याकूब, कैफ़ा और
यूहन्ना जो खंभे समझे जाते थे, जब उन्होंने
मुझे प्राप्त अनुग्रह[b] को देखा तब बरनबास
और मुझे सहभागिता का दाहिना हाथ दिया।
उन्होंने यह सलाह मान ली कि हम गैर
यहूदियों के पास जाएँ और वे यहूदियों के
पास, 10 परन्तु वे चाहते थे कि हम गरीबों का
ध्यान रखें। मैं भी वही करने के लिए तैयार
था।

11 जब पतरस अन्ताकिया आया, मैंने
उसके सामने उसका विरोध किया, क्योंकि
वह दोषी था। 12 इसलिए कि याकूब की
ओर से कुछ लोगों के आने से पहले वह
गैरयहूदियों के साथ खाना खाता था। किन्तु
जब वे वहाँ पहुँचे, खतना वालों के डर
से उसने अपने आपको अलग कर लिया।
13 दूसरे यहूदी भी उसके साथ धोखे में पड़
गए, यहाँ तक कि बरनबास भी उसी कपट
में बह गया।

14 जब मैंने यह देखा, कि वे सच्चे संदेश[c] के
सत्य के अनुसार बर्ताव नहीं कर रहे हैं, सब
के सामने मैंने पतरस से कहा, “यहूदी होकर
यदि तुम गैर यहूदियों की तरह जिओगे,
यहूदियों के समान नहीं, तो तुम गैर यहूदियों
को यहूदियों की तरह जीने के लिए क्यों
मजबूर करते हो?

15 हालाँकि हम जन्म से यहूदी हैं और
गैरयहूदियों में से नहीं, 16 तौभी यह जान कर
कि इन्सान नियमशास्त्र[d] के अनुसार काम
करने से नहीं, “बल्कि सिर्फ़ यीशु मसीह
पर विश्वास लाने से क्षमा किया हुआ और
सिद्ध ठहरता है। हम ने भी यीशु मसीह
पर विश्वास किया ताकि हम भी यीशु पर
विश्वास करने से क्षमा किये जाएँऔर सिद्ध
ठहराए जाएँ न कि नियमों-आज्ञाओं के पालन
करने से। क्योंकि नियमशास्त्र के अनुसार

[a] 2.2 मेहनत [b] 2.9 मेरे बदलाव [c] 2.14 सुसमाचार [d] 2.16 व्यवस्था

करने वाला कोई भी इन्सान सिद्ध[a] नहीं ठहरेगा।
17 हम जो मसीह में निर्दोष और परमेश्वर के सामने पूर्ण ठहरना चाहते हैं अगर खुद ही गुनाहगार निकले, तो क्या मसीह ने हमें गुनाह करने के लिए उभारा है? बिल्कुल नहीं 18 क्योंकि जो कुछ मैंने ढा दिया अगर उसे फिर बनाऊँ, तो खुद मैं ही परमेश्वर के कानून को तोड़ने वाला हुआ। 19 नियमों का पालन करके मैं परमेश्वर को सन्तुष्ट करना चाह रहा था,लेकिन असफल हो गया। इसलिये कोशिश करना बन्द कर दिया 20 मेरी पुरानी जीवन शैली का अन्त हो चुका है, अब मैं नहीं, लेकिन मसीह मुझ में जीवित हैं। इसलिए इस देह में जो जीवन मैं जी रहा हूँ, यह परमेश्वर के बेटे यीशु की विश्वासयोग्यता की वजह से है, जिन्होंने मुझ से प्यार किया और अपने आप को मेरे लिए दे दिया। 21 मैं परमेश्वर की असीमित कृपा को नज़रअन्दाज़ नहीं करता हूँ, क्योंकि अगर नियमों - आज्ञाओं से धर्मी[b] ठहराया जाना होता, तो मसीह का मरना बेकार हुआ होता।

3 हे मूर्ख गलातिया वासियो, तुम्हें किस ने मोह लिया है, कि तुम सच्चाई को न अपनाओ। सूली पर चढ़ाए गए यीशु मसीह के बारे में तुम्हें सिखाया गया था। 2 मैं तुम से एक बात पूछना चाहता हूँ: क्या पवित्र आत्मा तुमने आज्ञाओं को मानने से पाया था, या विश्वास से सुनने के द्वारा? 3 क्या तुम इतने मूर्ख हो कि पवित्र आत्मा में शुरूआत करने के बाद अब अच्छे काम करके परमेश्वर से कुछ हासिल करनाचाह रहे हो ? 4 क्या तुमने इतना सब कुछ बेकार ही सहा? यदि हाँ, तो सब व्यर्थ ठहरा, 5 जो तुम्हें पवित्र आत्मा देते हैं, और तुम्हारे बीच में अजीब कार्य करते हैं क्या वह आज्ञाओं के के मानने के कारण करते हैं या तुम्हारे विश्वास से सुनने के कारण?
6 परमेश्वर पर भरोसा किये जाने की वजह से उसे अपनाया गया। 7 इसलिए यह समझ लो, कि जो लोग मसीह पर सज़ा मुक्ति के लिये विश्वास लाते हैं, वे ही अब्राहम के बेटे-बेटियाँ हैं। 8 यह बात ध्यान में रख कर कि विश्वास द्वारा गैरयहूदियों को सिद्ध या सज़ा मुक्त ठहराया जाएगा, सुसमाचार की पहले ही से यह कहते हुए घोषणा की थी "सभी राष्ट्र तुम में आशीष पाएँगे" 9 इसलिए जिन के पास विश्वास है वे विश्वास करने वाले अब्राहम के साथ आशीषित हैं।
10 इसलिए कि जितने आज्ञाओं के माने जानेपर निर्भर हैं, वे सज़ा के अधीन हैं। क्योंकि यह लिखा है "हर एक वह जन दण्डित है जो नियमशास्त्र में लिखी हर एक बात में बना नहीं रहता है।" 11 परन्तु यह स्पष्ट है कि परमेश्वर की दृष्टि में कोई भी इसलिए खरा और निर्दोष नहीं ठहरता क्योंकि वह नियमों का पालन करता है, इसलिए कि धर्मी ठहराया हुआ व्यक्ति विश्वास से जीवित रहेगा। 12 आज्ञाओं के मानने का विश्वास से कोई सम्बन्ध नहीं हैं, किन्तु "जो व्यक्ति उनका पालन करता है उनके द्वारा उम्र भर सुख का स्वाद चखेगा" 13 मसीह ने हमें नियम-आज्ञाओं कि खिलाफ़ जाने की सज़ा से आज़ाद किया है[c] 14 ताकि

[a] **2.16** निर्दोष [b] **2.21** सिद्ध या निर्दोष [c] **3.13** इसलिए कि लिखा है, कि वह इन्सान जिसे सूली पर चढ़ाया जाता है, वह सज़ा को भुगतता है

अब्राहम की आशीष यीशु द्वारा गैर यहूदियों तक पहुँचे जिस से हम विश्वास द्वारा पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा पाएँ।

15 भाईयो-बहनो, मैं लोगों की जीवन शैली की बात करता हूँ: एक बार जब मनुष्य द्वारा बाँधी वाचा की पुष्टि हो जाती है, कोई भी उसे खारिज नहीं करता, न ही उसमें कुछ जोड़ता है। 16 अब्राहम और उसके वंश से प्रतिज्ञाएँ की गयी थीं। यहाँ "वंशों से" नहीं लिखा है, किन्तु "तुम्हारे वंश से" जिस का अर्थ है एक व्यक्ति, जो मसीह हैं। 17 मैं यह कहता हूँ कि नियमशास्त्र जो 430 वर्ष बाद दिया गया, उससे अब्राहम को दी गई प्रतिज्ञा रद्द नहीं हो गयी। 18 इसलिए यदि विरासत आज्ञाओं के मानने से मिलती है, तो यह प्रतिज्ञा पर आधारित नहीं हुयी। परन्तु परमेश्वर ने अपनी कृपा से अब्राहम को प्रतिज्ञा द्वारा दिया।

19 फिर नियमशास्त्र से क्या लाभ है? जब तक वह वंश न आ जाए जिस से प्रतिज्ञा की गयी थी, यह अपराधों के कारण बाद में जोड़ी गयी थी। यह मध्यस्थ और स्वर्गदूतों द्वारा निर्धारित की गयी थी। 20 मध्यस्थ एक ही पक्ष के लिए नहीं होता है, लेकिन परमेश्वर के साथ ऐसा है।

21 तो क्या नियमशास्त्र परमेश्वर के वायदों के विरोध में है? बिल्कुल नहीं, क्योंकि यदि ऐसा नियमशास्त्र दिया जाता जो जीवन दे सकता, तो निर्दोषता[a], नियमों-आज्ञाओं के पालन करने से मिलती 22 वचन[b] ने हर एक के लिये सज़ा ठहरायी है, जो बलवई है, ताकि जो प्रतिज्ञा यीशु मसीह पर विश्वास के फलस्वरूप आती है, उन्हें दी जा सके जो विश्वास करते हैं।

23 लेकिन इसके पहले कि विश्वास आए, हमें नियमशास्त्र के अधीन रखा गया था, ताकि प्रगट होने वाले विश्वास के प्रकट होने तक हम उसी की अधीनता में रहें। 24 इसलिए नियमशास्त्र हमें मसीह तक लाने के लिए शिक्षक ठहरा जिस से हमें विश्वास के आधार पर सज़ा मुक्त ठहराया जा सके। 25 किन्तु अब क्योंकि विश्वास आ पहुँचा है, हम शिक्षक के अधीन न रहे।

26 यीशु पर विश्वास करने से तुम सब परमेश्वर की संतान हो। 27 तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा पाया है उन्होंने मसीह को ओढ़ लिया है। 28 अब न कोई यहूदी है न गैर यहूदी। गुलाम और आज़ाद में अन्तर नहीं, न ही कोई नर या नारी है। यीशु मसीह में तुम सभी समान हो, 29 यदि वचन के अनुसार तुम मसीह के हो, तो अब्राहम का वंश और मीरास के अधिकारी।

4 अब मैं यह कह रहा हूँ कि एक वारिसदार नाबालिग, जिस का सब चीज़ों पर अधिकार है, गुलाम से फ़र्क नहीं है। 2 पिता द्वारा नियुक्त समय तक वह निगरानी रखने वाले और प्रबन्धक के अधीन है। 3 इसी तरह हम[c] भी अपने बचपन के समय से इस संसार की शुरुआती शिक्षाओं[d] की गुलामी में थे। 4 किन्तु जब समय पूरा हुआ, परमेश्वर ने स्त्री के द्वारा अपने पुत्र को भेजा, जो नियम की अधीनता में उत्पन्न हुए। 5 ताकि जो लोग उस नियम की पाबन्दी में थे, उन्हें अधिकार प्राप्त सन्तान की तरह गोद लिया जा सके। 6 इसलिए कि तुम पिता की सन्तान ठहरे, उन्होंने हमारे भीतर अपने बेटे की आत्मा को भेज दिया, जो

[a] **3.21** माफी [b] **3.22** नियमशास्त्र [c] **4.3** यहूदी [d] **4.3** यहूदी नियमों

“पिता” कह कर पुकारता है। 7 इसलिए अब
तुम गुलाम नहीं, किन्तु बेटे-बेटी हो और यदि
बेटे-बेटी हो, तो मसीह के द्वारा वारिसदार
भी।
8 परन्तु एक समय जब तुम परमेश्वर को
नहीं जानते थे, तो स्वभाव से उनके गुलाम थे
जो परमेश्वर नहीं था। 9 अब जब कि तुमने
परमेश्वर को जान लिया है या उन्होंने तुम्हें
जान लिया है, यह क्या कि तुम उन कमज़ोर
और शुरूआत की बातों की चाह करके फिर
से उनकी गुलामी में जा रहे हो। 10 तुम दिनों,
महीनों और अलग-अलग समयों को मानने
वाले बन गए हो। 11 मुझे यह डर है, कि जो
मेहनत मैंने तुम्हारे लिए की है वह बेकार न
जाए।
12 भाईयो-बहनो, मैं तुम से बिनती करता
हूँ कि जैसा मैं तुम्हारे समान बना, तुम भी
मेरे समान बन जाओ तुमने किसी भी तरह से
मेरा कुछ नुकसान नहीं किया है। 13 तुम यह
जानते हो, कि शारीरिक कमज़ोरी की वजह
से मैंने पहले तुम्हें सु-संदेश दिया था। 14 मेरी
देह में मुझे जिस कमज़ोरी को सहना पड़ा
उसे न ही तुमने तुच्छ जाना न खिल्ली उड़ाई,
परन्तु मुझे परमेश्वर के स्वर्गदूत के रूप में
स्वीकार किया, यहाँ तक कि मुझे मसीह
यीशु के समान समझा। 15 जिस आशीष के
विषय तुमने कहा, वह सब कहाँ है? इसलिए
कि मैंने तुम्हारे बारे में गवाही दी थी, कि
यदि सम्भव होता, तो तुमने अपनी आँखों को
निकाल कर दे दिया होता। 16 क्या अब मैं
तुम्हारा दुश्मन हो गया हूँ, क्योंकि मैं तुम्हें
सत्य बताता हूँ।
17 वे तुम्हें फुसला करके तुम्हें अपना दोस्त
बनाना चाहते हैं, लेकिन किसी अच्छे उद्देश्य
से नहीं, हाँ, वे तुम्हें हम से अलग करना
माँगते हैं, ताकि तुम बड़ी उमंग से उनकी
मानने लगो। 18 यह भला है कि किसी अच्छी
बात में जोश सदा बना रहे, न केवल तब, जब
मैं तुम्हारे साथ हूँ? 19 मेरे छोटे बच्चो, जब तक
कि मसीह तुम में न बन जाएँ, तब तक मैं जच्चा
की सी पीड़ा सहता हूँ, 20 मेरी इच्छा है कि
तुम्हारे साथ रहूँ और अपने बोलने के तरीके
को बदलूँ क्योंकि मैं तुम्हारे विषय उलझन में
हूँ।
21 मुझे बताओ, तुम जो नियमशास्त्र का
पालन करना चाहते हो क्या नियम शास्त्र
की नहीं सुनते? 22 क्योंकि यह लिखा है कि
अब्राहम के दो बेटे थे, एक उसकी दासी
से और दूसरा उसकी पत्नी से, 23 शरीर की
इच्छा से जो बेटा दासी से उत्पन्न हुआ, वह
अब्राहम का स्वयं का फ़ैसला था, लेकिन जो
उसकी पत्नी से उत्पन्न हुआ, वह परमेश्वर
से मिले हुए वायदे के कारण था।
24 ये बातें एक प्रतीक हैं, इसलिए कि ये दो
वाचाएँ हैं। एक सीनै पर्वत से है जो गुलामी
उत्पन्न करती है, यह हाज़िरा है। 25 इसलिए
कि यह हाज़िरा अरब में सीनै पहाड़ है और
वर्तमान के यरूशलेम को दिखाती है, जो
अपने बच्चों के साथ गुलामी में है। 26 किन्तु
यरूशलेम जो ऊपर है, आज़ाद है और हम
सब की माँ है। 27 क्योंकि लिखा है, “हे
बाँझ, तुम जो बच्चे नहीं पैदा करती हो, तुम
जिसे प्रसव की पीड़ा नहीं है, आनन्द करो,
क्योंकि छोड़ी हुयी की सन्तान सुहागिन की
सन्तान से अधिक है।”
28 अब भाईयो-बहनो, हम प्रतिज्ञा की
सन्तान हैं। 29 जिस तरह से जो देह की इच्छा
से उत्पन्न हुआ था, आत्मा से जन्में हुए को
सताता था, वैसा आज भी है। 30 बाइबल
क्या कहती है? वह यह कि गुलाम महिला
और उसके बेटे को निकाल दो, क्योंकि
गुलाम महला का बेटा आज़ाद महिला के

बेटे के साथ मीरास का हकदार नहीं होगा।
31 इसलिए भाईयो-बहनो, हम गुलाम महिला
के बच्चे नहीं हैं, लेकिन आज़ाद महिला के हैं।

5 जिस आज़ादी के लिए मसीह ने हमें
आज़ाद किया है, उसमें मज़बूती से
बने रहो। गुलामी के बन्धन[a] में बन्धे रहना
स्वीकार न करो।
2 मैं पौलुस तुम से कहता हूँ, कि यदि तुम
खतना कराओगे, तो मसीह से कोई फ़ायदा
नहीं होगा। 3 मैं गंभीरता से हर व्यक्ति
के सामने ऐलान करता हूँ कि जो खतना
करवाता है उसे सभी धार्मिक नियमों को
मानना पड़ेगा। 4 तुम जो धार्मिक नियमों के
द्वारा खरे या सिद्ध ठहराए जाना चाहते हो,
मसीह तुम से दूर हो गए हैं और तुम अति
महान् कृपा[b] से हठ चुके हो। 5 आत्मा के
द्वारा हम उद्धार के सभी फ़ायदों का इन्तज़ार
करते हैं, जो विश्वास से हैं। 6 यीशु मसीह
में न खतना[c] न खतनाहीन कुछ हासिल कर
सकता है, लेकिन सिर्फ़ विश्वास जो प्रेम
द्वारा प्रेरित है।
7 तुम अच्छी दौड़ दौड़ रहे थे। तुम्हें किस ने
रोक दिया ताकि तुम सत्य को न मानो? 8 यह
शिक्षा तुम्हें उन से नहीं मिलती है, जिन्होंने
तुम्हें बुलाया है। 9 थोड़ा सा खमीर पूरे आटे
को खमीरा कर देता है। 10 मुझे यीशु में तुम
पर भरोसा है, कि तुम किसी और शिक्षा को
नहीं अपनाओगे। जो तुम्हें परेशान कर रहा है,
चाहे वह कोई भी क्यों न हो, सज़ा पाएगा।
11 भाईयो-बहनो, जहाँ तक मेरा सवाल है
यदि मैं अभी भी खतने का संदेश देता हूँ, तो
मैं सताव क्यों सह रहा हूँ? यदि ऐसा है तो
क्रूस से ठोकर लगने की बात ही नहीं रही।
12 जो तुम्हें परेशान करते हैं, अच्छा होता कि
वे अपने अंग को ही काट डालते।
13 भाईयो-बहनो, तुम्हें आज़ादी के लिए
अलग किया गया है किन्तु इस आज़ादी को
अपनी शारीरिक इच्छा पूरी करने के लिए
इस्तेमाल मत करो। इसके बजाए प्रेम से एक
दूसरे की सेवा करो। 14 पूरे नियमशास्त्र का
एक निचोड़ यह है: “तुम अपने दूसरों से से
अपने समान प्रेम रखो” 15 किन्तु यदि तुम
एक दूसरे को फाड़ खाते हो, तो सतर्क रहो,
कि एक दूसरे को खत्म न कर डालो।
16 इसलिए मैं कहता हूँ आत्मा के द्वारा
जीवन जियो तब तुम अपनी इच्छाओं के
अनुसार नहीं जिओगे। 17 क्योंकि पुराना
स्वभाव पवित्र आत्मा के विरोध में इच्छा
रखता है और पवित्र आत्मा पुराने स्वभाव के
विरोध में। ये एक दूसरे के विरोधी हैं, ताकि
तुम वह सब न कर सको, जो तुम चाहते हो।
18 किन्तु यदि तुम पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन
से जीवन बिताते हो, तो तुम नियमशास्त्र की
अधीनता में नहीं हो।
19 पुराने स्वभाव के कार्य ये सब हैं,
व्यभिचार, लुचपन, अशुद्धता, दुष्टता,
20 मूर्तिपूजा, जादू-टोना, नफ़रत, झगड़े,
गलत शिक्षाएँ, ईर्ष्या, क्रोध, हत्या,
मतवालापन, 21 डाह, लीला-क्रीड़ा और इस
तरह के अनेकों काम हैं, जिन के बारे में मैं
पहले से बता चुका हूँ। ऐसा करने वाले
लोग परमेश्वर के राज्य की हिस्सेदारी में
शामिल न हो सकेंगे।।
22 किन्तु पवित्र आत्मा का फल प्रेम, खुशी,
शान्ति, धीरज, सहनशीलता, दयालुता,
भलाई, विश्वास, 23 नम्रता और संयम है।
इन सब के विरोध में कोई व्यवस्था[d] नहीं

[a] **5.1** प्रथा या रीति रिवाज़ [b] **5.4** फ़ज़ल या अनुग्रह [c] **5.6** एक प्रथा [d] **5.23** नियमशास्त्र

है। 24 जो मसीह के हो चुके हैं, उन्होंने
अभिलाषाओं और इच्छाओं सहित पुराने
स्वभाव को क्रूस पर चढ़ा दिया है। 25 यदि
हम पवित्र आत्मा में जीवित हैं, तो उसी
के अनुसार हमारा जीवन जिया जाए। 26 हम
झूठी बड़ाई की चाह रख कर एक दूसरे को
न चिढ़ाएँ और न ही एक दूसरे से जलें।

6 भाईयो-बहनो, कोई भी व्यक्ति सच्चाई
और ईमानदारी के रास्ते से भटक
सकता है।ऐसे व्यक्ति को नम्रता से
समझाओ। तुम लोगों को चाहिए कि तुम
भी सतर्क रहो, ताकि भटक न जाओ। 2 एक
दूसरे का बोझ उठा कर मसीह का नियम पूरा
करो। 3 यदि कोई व्यक्ति यह सोचे कि वह
कुछ है, जब कि कुछ नहीं है, तो वह अपने
आप को धोखा देता है। 4 प्रत्येक व्यक्ति
अपने काम को जाँचे और करके दिखाए,
तब उसे किसी दूसरे के काम में नहीं लेकिन
अपने काम में खुश होने का मौका मिलेगा।
5 क्योंकि हर एक को अपनी ज़िम्मेदारी खुद
पूरी करनी है।
6 जो दूसरों से बाईबल की शिक्षा पाता
है वह सभी अच्छी वस्तुओं को शिक्षा देने
वालों के साथ बाँटे।
7 धोखे में मत रहना, परमेश्वर को मज़ाक
में नहीं लिया जा सकता, मनुष्य जो कुछ भी
बोता है, वही काटेगा भी। 8 जो अपने मन
के अनुसार जियेगा, वह बर्बादी की फ़सल
काटेगा। जो पवित्रात्मा के मार्गदर्शन में
चलेगा, वह पवित्र आत्मा से अनन्तकालिक
फ़सल[a] पाएगा। 9 भलाई करने में हम थक
न जाएँ, क्योंकि यदि हम हिम्मत न हारें, तो
निश्चित समय पर फ़सल देखेंगे। 10 इसलिए
जब हमें मौका मिलता है, सब के साथ भला
बर्ताव करें, खासकर उनके साथ जो यीशु
पर भरोसा रख चुके हैं। 11 मैंने अपने हाथों
से बड़े-बड़े अक्षरों में किस तरह लिखा है,
यह देखो!
12 जो लोग खतना करना चाहते हैं, वे
मसीह के क्रूस के कारण आने वाले सताव से
बचना चाहते हैं। 13 जो लोग खतना करवाते
हैं, वे भी नियम शास्त्र का पालन नहीं करते
हैं। वे तुम्हारा खतना इसलिए करवाना चाहते
हैं, ताकि तुम्हारे कारण घमण्ड कर सकें।
14 लेकिन परमेश्वर करे, कि मैं यीशु मसीह
के क्रूस को छोड़ कर किसी और बात का
घमण्ड न करूँ, जिस के कारण मेरे लिए
संसार क्रूस पर चढ़ाया जा चुका है और मैं
संसार के लिए। 15 इसलिए कि मसीह में न
खतना और न खतना रहित का कुछ अर्थ
है, किन्तु एक नयी सृष्टि। 16 उन लोगों को
शान्ति और अनुग्रह[b] मिले, जो इस नियम पर
चलते हैं। परमेश्वर के इस्राएल को भी।
17 अब से कोई मुझे परेशान न करे, क्योंकि
मैं अपनी देह पर यीशु मसीह के दागों को
सहता हूँ।
18 भाईयो-बहनो, प्रभु यीशु मसीह की
असीम कृपा[c] तुम्हारी आत्माओं के साथ हो।
ऐसा होता रहे।

[a] **6.8** सदा काल का जीवन [b] **6.16** कृपा [c] **6.18** अनुग्रह

DUSTY SANDALS
All Rights Reserved. www.dustysandals.com